खयाली पुलाव

डॉ. आभा पूर्वे

अंगप्रदेश के लोकप्रिय दोहाकार

धनञ्जय मिश्र

कैं ई कृति समर्पित

—आभा

खयाली पुलाव

(अंगिका बाल कथागीत)

डॉ. आभा पूर्वे

प्राचार्या : अद्वैत मिशन ट्रेनिंग कॉलेज,
मंदार विद्यापीठ, बाँका, बिहार

प्रकाशक

© Dr. Abha purvey

बाल काव्य : खयाली पुलाव
कवयित्री : डॉ. आभा पूर्वे
संस्करण : २००६ ई.
प्रकाशक : अंगिका संसद, भागलपुर (बिहार)
मुद्रक : एमएलपी, भागलपुर
मूल्य : २० रूपये

KHAYALI PULAW By Dr. Abha purvey

ई दोनो कथा उत्तरांगी के अंक छः वर्ष 200 के अंत में ही छपी चुकलों छेलै । जे बहुत बच्चा सिनी के बीच लोकप्रिय होलो छेलै । एत्तें दिनों के बाद ई दोनों कथा गीत कें आबें हम्में पुस्तकाकार रूप में राखी रहलों छियै ताकि बच्चा बुतरु सिनी फेनू सें ऊ कथागीत कें पढ़ें सकै आरो बतावें सकै कि हमरों ई प्रयास केन्हों रहलै । प्रतिक्रिया के प्रतीक्षा रहतै ।

—आभा पूर्वे

कविता-क्रम

खयाली पुलाव

पंचतंत्रों रों कथा सुनों
ज्ञान बीया के बुनों-बुनों
कहीं रहै एक पंडी जी
सोचै दिन भर की-की-की
एक दिन लेलकै घैलों एक
मन में करी कें एक्के टेक
यै में चिकसों जोगना छै
आगू सुख कें भोगना छै
ई सोची कें रोज जुटाय

चिकसोॅ वै में देलेॅ जाय
आरो मन में सोचै ई
"नै ऐलोॅ छै भले अभी
ऊ अकाल तें आन्है छै
दोॅर अन्न के बढ़न्है छै
तखनी हम्में मँहगोॅ दर में
बेचवै चिकसोॅ राखलोॅ घर में
चिकसोॅ बिकी कें ऐतै धोॅन
गदगद होतै तखनी मोॅन
वही धनोॅ सें हम्में एक
किनवै बकरी, वहीं अनेक
देतै पठरू-पाठी भी
भले अंकिंचन छियै अभी

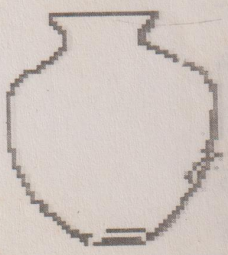

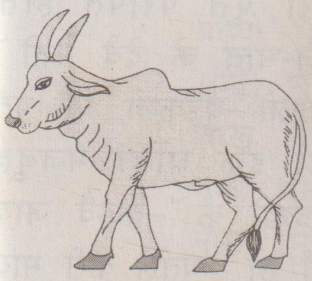

कल ऊ बेची पाठा-पाठी
लेवै गैया हट्ठी-कट्ठी
गैय्यां अगर बियैती बाछी
बेचवें ओकरौ नाँची नाँची
ओकरो सें जे ऐतै धोॅन
देखतै दुनियां, देखतै जोॅन
आरो हम्में वही धनोॅ सें
किनवै एक ठो भैंस मनोॅ सें
भैंस बियैतै पाड़ा-पाड़ी
बेची वहू भी लेवै घोड़ी
घोड़ियो सें जे होतै बच्चा
ओकरो बेची पुरबै इच्छा
किनवै एक ठो घोॅर बड़ोॅ
आय कत्तो ई भाग अड़ोॅ
घोॅर जेन्है केॅ कीनी लेवै

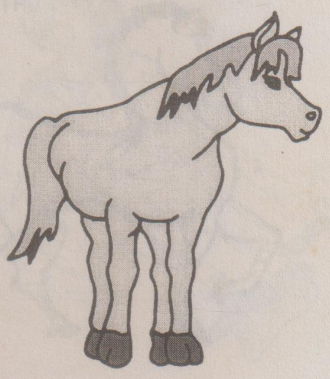

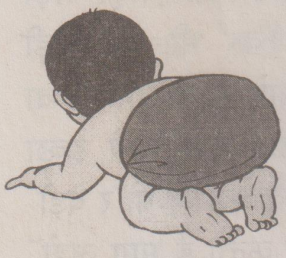

हम्में आपनो ˇ व्याह रचैवै
हमरौ पूत परापत होतै
भोज-भात के देवै नेतो ˇ
घुड़कलो ˇ-घुड़कलो ˇ ऐतै पूत
जैंठा इक घोड़ा मजबूत
ई देखी के ˇ कहवै जाय
कहाँ छो ˇ बुतरू केरी माय
नै ऐती ते ˇ हम्मी जाय
लेवै पूत के ˇ गोद उठाय
एतनै टा की होतै बात
धोड़ा के ˇ देवै कसलो ˇ लात''

ई सोची के ˇ होने गोड़
दैइये देलके ˇ ताबड़-तोड़
मतुर वहाँ ते ˇ छेलै कुछ
घैलो ˇ भसकी गेलै मुच
अजब खियाली पुलाव के फौंल
पंडित जी कें ˇ मिलै नै कौंल ।

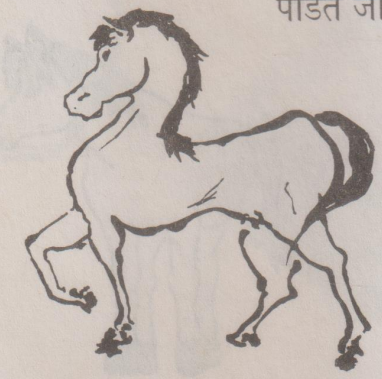

पहाड़ तरें ऊँट

पढ़वोॅ-सुनवोॅ नै जाय वृथा
सुनों, सुनैयों एक कथा
लाख बरस से भी ऊपर
एक मनुख छेलै भू पर
नाम मुरारी लाल छेलै
सुख-सम्पत रों बीच खेलै
मतरकि ऐलै ऊ दुर्दिन
समय बनी गेलै बाघिन
एकेक करी कें गेलै धोॅन
लगै मुरारी केॅ नै मोॅन
सोचै धोॅन कमावै के
रस्ता एकरों पावै के
सूझै मतर नै कोय उपाय

घोर निराशा आगू छाय
आखिर में सोचलकै ई
"बेची दियै ऊ कैहिने नी
पुरखा केरों तराजू कें
मजगुत करियै बाजू कें
बिकला सें जे ऐतै धोंन
व्यापारों में देवै मोंन"
ई सोची कें तराजू लै
यमुना दास लुगां गेलै
यमुना दास जे बड़का सेठ
ढंग होने जों बड़का पेट
गिरवी रखी तराजू कें
चललै दूर नगर आवें
जाय वक्ती बोललै-"ऐवौं
टाका दै ई लै जैवौ ।"

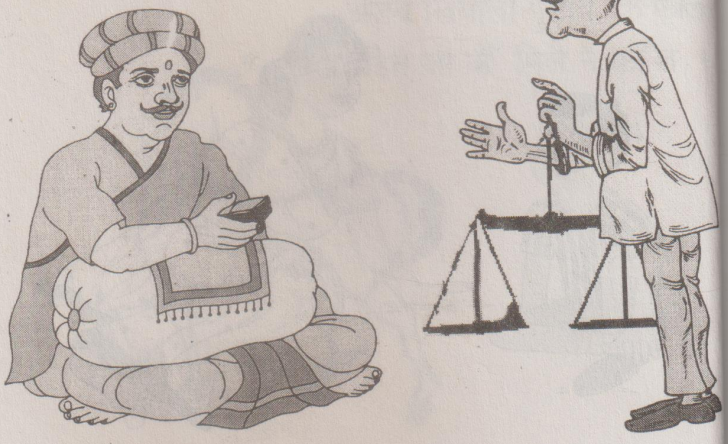

आखिर जाय विदेशों में
व्यापारी के भेषों में
धन अरजलकै अपरम्पार
याद ऐलै तबें घोॅर द्वार
घर लौटी कें आवी गेलै
सेठों लुग पहलें ऊ गेलै
माँगलकै आपनोॅ सामान
गिरवी राखलोॅ कुल के मान
पर सेठों रों नीयते खोट
ग्लानि केरों बनैलें ओट
बोललै-"दुख छै हमरा घोर
तोरों तराजू सम्पतखोर
मूसों खाय गेलौं अफसोस
मूसोॅ पर छै हमरौ रोष

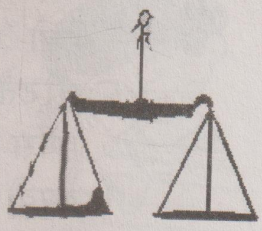

लेकिन की करियै बोलो ँ
भले केन्हौं हमरा तौलो ँ ।"
कुछ सोची के मुरारी लाल
बोललै -"सेठ जी व्यर्थ मलाल
गेलो ँ चीज ले ँ रोना की
लौटतै नै, पछताना की
हमरा वै ले ँ फिकरो नै
करवौं आय सें जिकरो नै
पर अतना सहयोग करो ँ
पास में छै सम्पत हमरो ँ
तोरो ँ पूत जों कुछ देरी
जोगी दै-लौं जल फेरी
नद्दी जरा नहैला से ँ

परदेशो ँ रो ँ दोष भसे ँ
जरिये देर में छोड़ी देवै
वक्त बहुत नै ओकरो लेवै ।"
सेठ मुरारी बात सुनी
सुख सें लेलकै आँख मुनी
फेनू बोललै-'यैमें की
हमरों बेटा तोहरो नी
लै जा यै में की संकोच
आपना में की जरियो सोच ।"
वैश्य मुरारी लाल ले ले ँ
चललै सुत के । घाट होले ँ
आवी एक सुरंगों में
बांधी रस्सी अंगों में
राखी देलकै ओकरा जाय
आपनें लौटलै नदी नहाय ।

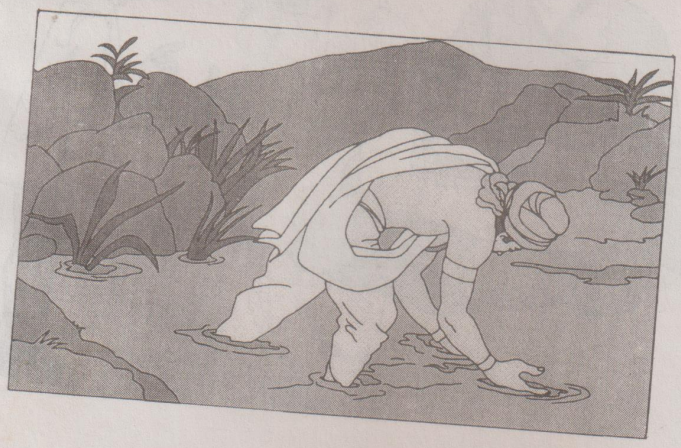

सुत नै देखी साथो ँ में
झटका लागलै माथो ँ में
बोललै सेठ सशंकित होय
भीतर-भीतर कंपित होय
सेठो ँ के सब बात सुनी
लेलकै माथो ँ वहूँ धुनी
बोललै-"की करियौ हे सेठ
बाजो ँ के हौ एक चपेट
लै उड़लै जे तोरो ँ लाल
काम नै ऐलै एक्को जाल
एकरो ँ हमरा बड़ा मलाल
काम नै ऐलै एक्को जाल ।"

ई सब बात सुनी कें सेठ
रही-रही क्रोध सें कस्सै फेंट
गुस्सा सें भीतर तक जली कें
आरो वै गुस्सै में चली कें
राजा रों दरबार पहुँचलै
जहाँ मुरारियो लाल ऐलै
सिंहासन पर राजा बैठलै
आरो मंत्रीगण भी जुटलै
हुकुम सुनी कें बोललै सेठ
"हमरों श्यामलाल सुत जेठ
लै गेलै यै मुरारी लाल
आबे एकरों दूसरो चाल
बोलै छै—लै बाज गेलै

की सफेद नै झूठ भेलै
न्याय करोॅ तोहीं राजा
दुखिरत एक तोरोॅ प्रजा
जेहने भेलै बात खतप
राजा करलें मूँ तम-तम
बोललै-"कहैं मुरारीलाल
ई केन्होॅ तोरोॅ छौ चाल ?"
हुकुम सुनी केॅ राजा रों
नै बोलेॅ हिम्मत केकरोॅ
बोललै सब ठो कथा पुराण
गिरवी सें लै केॅ असनान
आरो सबटा कथा कही
बोललै-"न्याय जों सही-सही

तें हमरा समझावोॅ ई
एक तुला लोहा रो ॅ की
मूसें खावें पारै छै
की है सभां विचारै छै
जो शक्ति है मूसों कें
एक तराजू लोहा कें
खावें पारै छै बोलोॅ
जे कि आय तक नै होलोॅ
तेॅ की अचरज यै में आज
जो लड़का लै गेलै बाज
जों मूसोॅ लोहा केॅ खाय
केना ना बाज मनुख लै जाय ?"
सेठ बैश्य रों बात सुनी

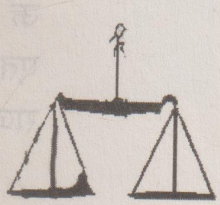

बोललै राजा, सभा गुनी
"धूर्त सेठ कें चाहियों कि
दियें तराजू तुरत अभी
न्यायों पर जे चूना पोतै
ऊ तें दण्ड के भागी होतै"
एतना कही सभा कै भंग
राजा गेलै मंत्री संग ।

जन्म : 23 अक्टूबर 1964, **जन्म-स्थान** : भागलपुर, **माता** : जीवनलता पूर्वे, **पिता** : रूद्रदत्त पूर्वे, **शिक्षा** : बी. ए., एम. ए. (गोल्डमेडल) पी. एच-डी., **प्रकाशित ग्रंथ** : पलाश खिल रहे हैं (हिन्दी कविताएँ), परबतिया (अंगिका उपन्यास), अन्तहीन वैतरणी (अंगिका उपन्यास), गुलबिया (अंगिका उपन्यास), शिरीष की सुधा (हिन्दी कहानी-संग्रह), चन्दन जल न जाए (हिन्दी कहानी-संग्रह), जब-जब झरे शृंगार (दोहा-संग्रह), गुलमोहर का गाँव (हिन्दी कविताएँ), महिलाएँ और दूरदर्शन (शोध-प्रबंध), आकाशगंगा (हिन्दी अणुकथा-संग्रह–यंत्रस्थ), **संपादन** : गीत-गंगा (अंगिका गीत-संग्रह), नवगीतकार मधुसूदन साहा, अर्द्धनारीश्वर (हिन्दी कहानियों का पंजाबी अनुवाद), जीवनलता पूर्वे : शांत नदी की अनन्त यात्रा (अंग महिला साहित्यकार संसद)–भागलपुर, अंगिका लोकगीत (अंगिका संसद)–भागलपुर, अंगिका लोककथा (अंगिका संसद)–भागलपुर, केकरों चाँद, केन्हों चाँद, खोई हुई लड़की का खत, नया हस्तक्षेप (अनियतकालीन पत्रिका), **संस्था से संबद्धता** : अध्यक्ष, अंग महिला साहित्यकार संसद, **सम्पर्क** : शरतचंद पथ, मशाकचक, भागलपुर-1 (बिहार)